॥ माँ अंबे जी की आरती ॥

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी ।
तुमको निशदिन ध्यावत, मैया जी को निशदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवरी ॥ ॐ जय अम्बे गौरी..

मांग सिंदूर विराजत, टीको मृगमद को ।
उज्ज्वल से दोउ नैना, निर्मल से दोउ नैना, चंद्रवदन नीको ॥ ॐ जय अम्बे गौरी..

कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजै ।
रक्तपुष्प गल माला, लाल फूल गल माला, कंठन पर साजै ॥ ॐ जय अम्बे गौरी..

केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी ।
सुर-नर-मुनिजन सेवत, सुर-नर-मुनिजन सेवत, तिनके दुखहारी ॥ ॐ जय अम्बे गौरी..

कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती ।
कोटिक चंद्र दिवाकर, कोटिक रत्न प्रभाकर, सम राजत ज्योती ॥ ॐ जय अम्बे गौरी..

शुंभ-निशुंभ बिदारे, महिषासुर घाती ।
धूम्र विलोचन नैना, मधुर विलोचन नैना, निशदिन मदमाती ॥ ॐ जय अम्बे गौरी..

चण्ड-मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे ।
मधु-कैटभ दोउ मारे, मधु-कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे ॥ ॐ जय अम्बे गौरी..

ब्रह्माणी, रूद्राणी, तुम कमला रानी ।
आगम निगम बखानी, वेद पुराण बखानी, तुम शिव पटरानी ॥ ॐ जय अम्बे गौरी..

चौंसठ योगिनी मंगल गावत, नृत्य करत भैरों ।
बाजत ताल मृदंगा, बाजत ढोल मृदंगा, अरू बाजत डमरू ॥ ॐ जय अम्बे गौरी..

तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता ।
भक्तन की दुख हरता, भक्तन की दुख हरता, सुख संपति करता ॥ ॐ जय अम्बे गौरी..

भुजा चार अति शोभित, खड्ग खप्पर धारी ।
मनवांछित फल पावत, मनइच्छा फल पावत, सेवत नर नारी ॥ ॐ जय अम्बे गौरी..

कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती ।
श्रीमालकेतु में राजत, विंध्याचल मैं विराजत, कोटि रतन ज्योती ॥ ॐ जय अम्बे गौरी..

श्री अंबेजी की आरति, जो कोइ नर गावे ।
कहत शिवानंद स्वामी, कहत भोलानंद स्वामी, मन बांछित फल पावे ॥ ॐ जय अम्बे गौरी..

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी ।
तुमको निशदिन ध्यावत, मैया जी को निशदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवरी ॥ ॐ जय अम्बे गौरी ॥

paramsoul.com